ऊदसलीब

नाम-ऊदसलीब (अरबी-उर्दू-यूनानी), ऊदसालप (बम्बई), (उर्दू), ऊदल सालप (अरबी), ममेख हिमालयन पिओनी (Himalayan Paeony), Paeony Rose (अंग्रेजी), पिओनिआ एमोडी-Paeoina Emodi Wall (लैटिन) । उत्पत्ति स्थान-क्रीम हिमालय में कश्मीर से कुमाऊँ तक। उपयुक्त अंग-मूल। मात्रा-२ से ५ रत्ती। रासायनिक संघटन—नयी जड़ में स्टार्च, शक्कर।, पैसा, मेलेटस, केसे- लेट्स, फोस्फेट्स, थोड़ा-सा टेनिन इत्यादि द्रव्य होते हैं । वर्णन-ऊदसलीब का पौधा बहुवर्षायु होता है । पण गाजर के समाल त्रिविभागित, प्रत्येक विभाग भल्लाकृति, तीक्ष्णाग्र, अखंडित होता है। पुष्प दर्शनीय, संख्या में कम, बड़े डंठल से युक्त, बहुधा एकाकी, ऊपर के पत्ते के कोने से निकले हुए, पूष्पवाह्यकोश के पत्र ५, पूष्पदल ५ से १०; लाल वा
सतरंगी, पुंकेसर बहुत से होते हैं। गर्भाशय १ से ३ रोम से आच्छादित, घनी

कृष्णिका के ऊपर रहता है। मूल १ से ३ इंच लम्बे, ३ से इच मोटे, मध्य में मोटे और दोनों छोरों पर गोपुच्छाकृति होते हैं । बाहरी पृष्ठ नीले परन्तु अन्दर से श्वेत पिमय होता है । छिलका काटने पर कुछ पीले रंग का मालूम होता है। इसके मल भारत में तुर्किस्तान से आते हैं।
रस-कटु, वीर्य-उष्ण, विपाक-कटु, दोषघ्नता-वात, कफ। गुण-ऊदसलीब उष्ण, रजःप्रवर्तक, मूत्रल, ज्ञानतंतुओं को बल देने वाली है। गर्भाशय के रोग, उदरशूल, जलोदर, अपस्मार, आक्षेपक, अपतंत्रक (हिस्टीरिया), कम्पवात, 1 उपयोग गुणा वह पक्षाघात, पथरी और पित्तावरोध में ऊदसलीब का है। रक्तशोधक के रूप में बच्चों को दिया जाता है। बच्चों के पथरी रोग में ऊदसलीब घिसकर पिलाने से अच्छा लाभ होता है। बच्चों को अपस्मार-मुरगी रोग-हुआ हो, तो इसकी जड़ का ताबीज़ बनाकर गले में पहनाने से उपयुक्त रोग ठीक होता है, ऐसा माना जाता है । अपस्मार के लिए यह औषध इतनी लाभदायक मानी जाती है कि
इसे घिसकर पिलाने से, पहनाने से या धनी देने से अपस्मार- -मिर्गी-अवश्य दूर होती है। इसके बीज बालकों के गले में बाँधने से बिना बाधा दंतोद्भेद शीघ्र होता है ऐसा
माना जाता है। अधिक मात्रा में लेने से सिर में दर्द, कान में आवाज, दृष्टि
भ्रम और छदि होती है।
वक्तव्य-डीमक के अनुसार ऊदसालप और ऊदे सालम् , ये दोनों शब्द अरबी शब्द उदूल स्लीव (Wood of the cross) के अपभ्रंश हैं। उदुल् सलीब पुरुपजातीय पौधे की जड़ को कहा जाता है, क्योंकि उसे काटने से ऐसी रेखाएँ दिखाई देती हैं जो परस्पर काटती हैं याने सलीब अर्थात् स्वस्तिक

के सी दशा होती हैं। नर पौधे को पिओनिआ केरेलिना और नारी पौधे को पिओनिआ ओफिसीनेलिस कहते हैं। स्त्रपुष्प के पौधे के मूल में इस प्रकार की स्वस्तिकाकृति नहीं देखने को कहते हैं। नर मिलती। कई लोग इसे 'फावानिया' भी जाति के मूल उदसलीव और स्त्री जाति के मूल 'फावानिया' के नाम से पहचाने जाते हैं।